नई **कहानी की विशेषताएँ**

पुष्पा महाराज
हिंदी विभाग

हिंदी साहित्य में “नई कहानी” एक महत्वपूर्ण और सशक्त साहित्यिक आंदोलन के रूप में जानी जाती है। इसका उदय स्वतंत्रता के बाद हुआ, जब भारतीय समाज राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहाँ एक ओर आशाएँ बढ़ीं, वहीं दूसरी ओर बेरोज़गारी, गरीबी, टूटते सामाजिक मूल्य और व्यक्ति की बढ़ती समस्याएँ भी सामने आईं। इन्हीं परिस्थितियों में नई कहानी का जन्म हुआ, जिसने आधुनिक मनुष्य के जीवन और मानसिकता को साहित्य में स्थान दिया।

नई कहानी का सबसे प्रमुख गुण **यथार्थ का सूक्ष्म चित्रण** है। यह यथार्थ केवल बाहरी घटनाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक जीवन को भी उजागर करता है। नई कहानी जीवन को न तो आदर्श रूप में प्रस्तुत करती है और न ही कल्पनालोक में ले जाती है, बल्कि जीवन की सच्चाइयों को उनके वास्तविक रूप में सामने रखती है। इसमें जीवन की विसंगतियाँ, टूटन और संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

नई कहानी की एक महत्वपूर्ण विशेषता **व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण** है। पारंपरिक कहानियों में जहाँ समाज और आदर्शों को प्रधानता दी जाती थी, वहीं नई कहानी में व्यक्ति के निजी अनुभव, भावनाएँ और संघर्ष प्रमुख हो जाते हैं। यहाँ व्यक्ति अपने अस्तित्व की तलाश करता हुआ दिखाई देता है। नई कहानी का नायक कोई महान या आदर्श व्यक्ति नहीं होता, बल्कि साधारण मनुष्य होता है, जो जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझ रहा होता है।

मानसिक द्वंद्व नई कहानी की आत्मा कहा जा सकता है। नई कहानी में बाहरी संघर्षों से अधिक महत्व आंतरिक संघर्षों को दिया गया है। पात्रों के मन में चलने वाली उथल-पुथल, तनाव, कुंठा, अकेलापन, भय और असंतोष को गहराई से चित्रित किया गया है। कर्तव्य और इच्छा, नैतिकता और स्वार्थ, प्रेम और जिम्मेदारी के बीच का संघर्ष नई कहानी को मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त बनाता है।

नई कहानी का **कथानक सीमित और संक्षिप्त** होता है। इसमें घटनाओं की अधिकता नहीं होती। किसी एक परिस्थिति, समस्या या क्षण को आधार बनाकर पूरी कहानी बुनी जाती है। कई बार कहानी बहुत छोटे समय-खंड को प्रस्तुत करती है, लेकिन उसी के माध्यम से पूरे जीवन की जटिलता उजागर कर देती है। इस प्रकार संक्षिप्तता में भी गहराई बनी रहती है।

नई कहानी में **खुले अंत** की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। लेखक कहानी का निष्कर्ष स्पष्ट रूप से नहीं देता, बल्कि उसे पाठक की सोच पर छोड़ देता है। इससे पाठक कहानी के साथ मानसिक रूप से जुड़ता है और स्वयं निष्कर्ष निकालने का प्रयास करता है। यह विशेषता नई कहानी को विचारोत्तेजक बनाती है।

प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग भी नई कहानी की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। साधारण घटनाओं, वस्तुओं और स्थितियों के माध्यम से गहरे अर्थ व्यक्त किए जाते हैं। प्रतीकात्मकता के कारण कहानी बहुआयामी बन जाती है और पाठक को बार-बार

सोचने के लिए प्रेरित करती है।

नई कहानी में मुख्यतः **शहरी मध्यवर्गीय जीवन** का चित्रण मिलता है। मध्यवर्ग की समस्याएँ—जैसे बेरोज़गारी, आर्थिक दबाव, नौकरी की असुरक्षा, पारिवारिक तनाव, दांपत्य जीवन की जटिलताएँ और सामाजिक दिखावा—नई कहानी के प्रमुख विषय हैं। यह वर्ग आधुनिक जीवन की सबसे अधिक चुनौतियों का सामना करता है, इसलिए नई कहानी का केंद्र भी यही वर्ग बनता है।

नई कहानी की **भाषा और शैली** सरल, सहज और बोलचाल के निकट होती है। इसमें कठिन शब्दावली और अलंकारों की भरमार नहीं होती। साधारण भाषा के माध्यम से गहरी बात कही जाती है, जिससे कहानी अधिक स्वाभाविक और प्रभावशाली बनती है। भाषा का यह सरल रूप पाठक से सीधा संवाद स्थापित करता है।

नई कहानी में **आदर्शवाद का अभाव** दिखाई देता है। यहाँ लेखक किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करने के बजाय जीवन की सच्चाइयों को सामने रखता है। नई कहानी प्रश्न उठाती है, उत्तर नहीं देती। यही कारण है कि यह पाठक को सोचने और आत्ममंथन के लिए विवश करती है।

नई कहानी आंदोलन को सशक्त बनाने में कई लेखकों का योगदान रहा है। **मोहन राकेश**, **राजेंद्र यादव**, **कमलेश्वर**, **अमरकांत** और **निर्मल वर्मा** जैसे कहानीकारों ने नई कहानी को नई संवेदना और नई दिशा प्रदान की। इनके लेखन में आधुनिक मनुष्य की पीड़ा, अकेलापन और संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

निष्कर्षतः, नई कहानी आधुनिक जीवन की जटिलताओं, सामाजिक विसंगतियों और व्यक्ति के आंतरिक सत्य की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह हिंदी कथा साहित्य को न केवल नई दृष्टि प्रदान करती है, बल्कि पाठक को जीवन के यथार्थ से साक्षात्कार भी कराती है। इसी कारण नई कहानी हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विधा के रूप में स्थापित हुई है।

पुष्पा महाराज
हिंदी विभाग
सेमेस्टर- VI
MJC, हिंदी